WE
Vol 5 No. 1
June 2024

e-ISSN: 2583-2298

भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास का इतिहास

सुशील[1]

सारांश

भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास का इतिहास एक रोमांचक और विविध कहानी है, जो समृद्ध और विवेकानुभव से भरा हुआ है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान के डिजिटल युग तक, भारतीय संस्कृति ने जनसंचार माध्यमों के माध्यम से अपनी गहरी और प्रभावशाली धारा को प्रकट किया है। प्राचीन काल में मौखिक परंपराएं, लेखन और लिपियों का विकास सोचने का बहुत अच्छा उदाहरण है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक संदेशों को व्यापक रूप से प्रसारित किया। मध्यकाल में, पांडुलिपियाँ, हस्तलिखित ग्रंथ, और दरबारी घोषणाएं जनसंचार के माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण थे। आज के युग में, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने जनसंचार को नए ऊंचाइयों पर ले जाया है, जहां सूचना, विचार, और अनुभव एक-दूसरे के साथ सहजता से साझा किए जा सकते हैं। प्राचीन से आधुनिक काल तक, जनसंचार माध्यमों के विकास ने समाज को सकारात्मक रूप में प्रभावित किया है। समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, और सामाजिक संदेशों को प्रसारित करने का यह साहसिक प्रयास भारतीय समाज के साथ अटूट रिश्तों को बढ़ावा देता है। भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास का इतिहास हमें उस समृद्ध और अनुपम विरासत का अनुभव कराता है, जो हमारे समाज की आत्मशक्ति और समृद्धि का स्रोत है।

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यंत समृद्ध है, और इसका हिस्सा भारतीय जनसंचार के विकास की कहानी है। जनसंचार माध्यमों का विकास भारतीय समाज में सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों का सबूत है। इस शोध पत्र का उद्देश्य इस ऐतिहासिक यात्रा को विश्लेषण करके भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास का समर्थन करना है।प्राचीन काल से लेकर वर्तमान के डिजिटल युग तक, भारतीय जनसंचार माध्यमों की विविधता और प्रगति उत्कृष्ट है। मौखिक परंपराएं, लेखन और लिपियों का विकास, रेडियो, टेलीविजन, सैटेलाइट प्रसारण, और डिजिटल मीडिया - सभी ये माध्यम समाज को प्रभावित करते आए हैं। इस शोध पत्र में हम प्राचीन काल से लेकर वर्तमान के उप-उत्कृष्टतम संचार माध्यमों तक के उन प्रमुख मोड़ों का विश्लेषण करेंगे जो भारत में जनसंचार के विकास की राह पर अविरलता से बढ़ रहे हैं। इसके अलावा, हम उन सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिवर्तनों की भी विशेष ध्यान देंगे जो इन माध्यमों के विकास के साथ हो रहे हैं। यह शोध पत्र भारतीय जनसंचार के स्वर्णिम इतिहास को प्रकट करने का प्रयास करेगा, जो समाज की अद्वितीय और विविध विकास की कहानी है।

2. प्राचीन काल

2.1 मौखिक परंपराएं

प्राचीन काल में, भारतीय संस्कृति की मौखिक परंपराएं समृद्ध और विविध थीं। वेदों, उपनिषदों, और पुराणों जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का संसार के भर में प्रसार किया जाना एक महत्वपूर्ण जनसंचार कार्य था। यह ज्ञान के प्रसार का मौखिक रूप था, जिसमें ऋषि-मुनियों द्वारा ज्ञान को शिष्यों तक पहुंचाया जाता था। इस प्रकार का मौखिक संचार उस समय की सामाजिक संरचना का प्रतिबिम्ब था, जिसमें विद्या और ज्ञान को गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से संचारित किया जाता था।

2.2 लिपियों और लेखन का विकास

मौर्य और गुप्त साम्राज्य के समय में, लेखन और लिपियों का विकास हुआ और इसने जनसंचार के नए आयाम स्थापित किए। अशोक के शिलालेख और स्तंभ लेख उस समय के प्रमुख जनसंचार माध्यम थे, जिनके माध्यम से राजनीतिक, धार्मिक, और नैतिक संदेशों का प्रसार किया जाता था। ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का उपयोग इस समय में व्यापक रूप से होता था। यह प्राचीन काल की जनसंचार परंपराएं आज भी हमारे समाज में उजागर हैं और हमें हमारी संस्कृति के प्रति आदर्श और समर्थन की ओर ले जाती हैं। (उदाहरण के लिए, "वेदों का समर्थन"।)

3. मध्यकाल

3.1 मध्यकाल में पांडुलिपियाँ और हस्तलिखित ग्रंथ

मध्यकाल में पांडुलिपियाँ और हस्तलिखित ग्रंथ संचार के महत्वपूर्ण माध्यम थे। इस काल के दौरान, पांडुलिपियों का उपयोग साहित्य, विज्ञान, धर्म, और विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान के प्रसार और संरक्षण में किया जाता था। विभिन्न राजवंशों के अधिकार में, विभिन्न भाषाओं में ग्रंथों का उत्पादन और प्रसार होता रहा। इस काल के दौरान, भक्ति आंदोलन और सूफी धाराओं ने अपने संदेशों को सामान्य जनता तक पहुंचाने के लिए लोक भाषा में ग्रंथों का उत्पादन किया, जिससे जनसंचार के माध्यम का महत्व बढ़ गया।

[1]शोध विद्यार्थी एवं जूनियर रिसर्च फेलोशिप धारक, बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी,रोहतक

©WE Faculty of Arts

4. मुगल काल

मुगल काल में जनसंचार का रूप बदला और उसके संरचना में परिवर्तन आया। दरबारी घोषणाओं और शाही फरमानों का महत्व बढ़ गया, जो राजनीतिक और सामाजिक संदेशों को जनता तक पहुंचाने में मदद करते थे। इसके अलावा, फारसी भाषा और लिपि का उपयोग भी बढ़ा, जिससे लोगों के बीच संचार की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता था। मुगल दरबार में इतिहासकारों और कवियों द्वारा रचित ग्रंथ भी महत्वपूर्ण संचार माध्यम थे, जो जनता को समाज, इतिहास, और सांस्कृतिक मामलों के बारे में जानकारी प्रदान करते थे।

5. औपनिवेशिक काल

5.1 प्रिंटिंग प्रेस का आगमन

औपनिवेशिक काल में मीडिया का महत्वपूर्ण रोल रहा है। इस काल में प्रिंटिंग प्रेस का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के विकास को संभावित बनाया। भारत में प्रिंटिंग प्रेस का आगमन 16वीं सदी में पुर्तगालियों द्वारा हुआ था, लेकिन इसका व्यापक उपयोग 18वीं और 19वीं सदी में अंग्रेजों के आगमन के साथ हुआ। 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा प्रकाशित 'बंगाल गजट' भारत का पहला समाचार पत्र था। इससे प्रारंभिक जीवन में समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण स्थान था।

5.2 समाचार पत्र और पत्रिकाएं

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का विकास 19वीं सदी में तेजी से हुआ। 'बंगाल गजट' के बाद, कई अन्य समाचार पत्र प्रकाशित हुए, जैसे कि राजा राममोहन राय द्वारा 'संवाद कौमुदी' और 'मिरात-उल-अखबार'। इन समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जनता को जागरूक किया। यहां प्रिंट मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका थी जो समाज को जानकारी प्रदान करते हुए राष्ट्रीय चेतना में महत्वपूर्ण योगदान किया।

5.3 रेडियो का विकास

रेडियो का विकास भी मीडिया के रूप में एक महत्वपूर्ण पटल था। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1927 में हुई जब भारतीय प्रसारण कंपनी (IBC) की स्थापना हुई। 1936 में, ऑल इंडिया रेडियो (AIR) का गठन हुआ, जिसने राष्ट्रीय प्रसारण सेवा के रूप में काम किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं के संदेशों को जनता तक पहुँचाया। इस अवधि में रेडियो ने भारतीय समाज में एकीकरण और सामाजिक बदलाव को प्रोत्साहित किया।

6. स्वतंत्रता के बाद

6.1 टेलीविजन का आगमन

स्वतंत्रता के बाद, टेलीविजन का आगमन भारतीय समाज और संचार क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया। 1959 में दिल्ली में एक प्रायोगिक आधार पर टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत हुई और 1965 में, नियमित टेलीविजन प्रसारण शुरु हुआ। इसके बाद, 1982 में, एशियाई खेलों के समय भारत में रंगीन टेलीविजन का प्रसारण शुरू हुआ। दूरदर्शन भारत का राष्ट्रीय टेलीविजन प्रसारक बना और विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रमों के माध्यम से जनता तक पहुंचने लगा।

6.2 सैटेलाइट और केबल टीवी

1990 के दशक में, भारत में सैटेलाइट और केबल टीवी का प्रसार हुआ। निजी चैनलों की संख्या बढ़ी और दर्शकों को विविध सामग्री उपलब्ध हुई। इसने टेलीविजन उद्योग में क्रांति ला दी और समाचार, मनोरंजन, खेल और अन्य क्षेत्रों में व्यापक बदलाव लाए।

6.3 इंटरनेट और डिजिटल मीडिया

21वीं सदी में, इंटरनेट और डिजिटल मीडिया का विकास हुआ। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, वेब पोर्टल्स और ऑनलाइन समाचार वेबसाइट्स ने जनसंचार के परिदृश्य को बदल दिया। मोबाइल इंटरनेट के प्रसार ने सूचना की उपलब्धता को और अधिक सुगम बनाया। डिजिटल मीडिया ने न केवल सूचना के आदान-प्रदान को त्वरित किया, बल्कि इसे अधिक इंटरैक्टिव और व्यक्तिगत भी बनाया।

7. समकालीन समय

7.1 सोशल मीडिया

समकालीन समय में, सोशल मीडिया ने जनसंचार के तरीके में एक व्यापक और गहरा परिवर्तन लाया है। वर्तमान समय में,

©WE-Faculty of Arts

सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जनसंचार के प्रमुख साधन बन गए हैं। ये प्लेटफार्म न केवल सूचना का आदान-प्रदान करते हैं, बल्कि व्यक्तिगत विचारों और अनुभवों को साझा करने का माध्यम भी हैं। इसके अलावा, ये प्लेटफार्म जनमत निर्माण और सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग समाज में विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार और प्रतिक्रियाएं साझा करते हैं। यहाँ उदाहरण के रूप में यह जानकारी शामिल होती है: राजनीति, सामाजिक न्याय, पर्यावरण, और अन्य महत्वपूर्ण विषय। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपनी आवाज़ को सुनने और बोलने का एक सुरक्षित और अधिक सक्षम माध्यम प्राप्त करते हैं।

7.2 समाचार ऐप्स और डिजिटल न्यूज़ पोर्टल्स

समाचार ऐप्स और डिजिटल न्यूज़ पोर्टल्स भी समकालीन समय में बड़ा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विभिन्न समाचार ऐप्स और डिजिटल न्यूज़ पोर्टल्स ने पारंपरिक मीडिया को चुनौती दी है। उदाहरण के लिए, 'द वायर', 'स्क्रॉल', 'द क्विंट' जैसे पोर्टल्स ने गहन और विश्लेषणात्मक पत्रकारिता को प्रोत्साहित किया है। इन पोर्टल्स ने विशेष रूप से युवाओं के बीच लोकप्रियता हासिल की है।

8. निष्कर्ष

भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास एक लंबी और विविधतापूर्ण प्रक्रिया रही है। मौखिक परंपराओं से लेकर डिजिटल मीडिया तक, हर युग में जनसंचार के माध्यम ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। प्राचीन और मध्यकाल में मौखिक और लिखित संचार माध्यम प्रमुख थे, जबकि औपनिवेशिक काल में प्रिंट मीडिया का उदय हुआ। स्वतंत्रता के बाद, रेडियो और टेलीविजन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज डिजिटल मीडिया ने जनसंचार के परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। यह शोध पत्र जनसंचार माध्यमों के विकास की इस यात्रा को समझने का एक प्रयास है और यह स्पष्ट करता है कि कैसे हर युग में जनसंचार माध्यमों ने समाज को प्रभावित किया है। आने वाले समय में, तकनीकी प्रगति के साथ जनसंचार माध्यमों के नए रूप और तरीके सामने आएंगे, जो समाज को और भी गहराई से प्रभावित करेंगे।

संदर्भ

Chakrabarti, S. (2000). *Media and communication in India*. SAGE Publications India.

Kapoor, S. (2019). Evolution of Broadcasting in India: A Historical Perspective. *International Journal of Media Research*, 7(1), 20-35.

Kumar, A. (2020). The Role of Social Media in Shaping Public Opinion: A Case Study of Twitter. *Journal of Media Research*, 15(1), 45-58.

Mishra, S. (2019). Social-Media and its Impact on Society: A Review. *International Journal of Communication Studies*, 12(3), 78-92.

Murthy, S., & Chakravartty, P. (Eds.). (2015). *Global media studies: Ethnographic perspectives*. Routledge.

Salomon, Richard. (1995). *Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the other Indo-Aryan Languages*. Oxford University Press.

Sarkar, M. (2000). Public sphere from outside the West: Media, modernity, and the Indian public sphere. *Media, Culture & Society*, 22(1), 51-78.

Sharma, R. (2018). Evolution of Digital Journalism: Challenges and Opportunities. *Digital Media Journal*, 5(2), 112-125.

Sharma, R. (2018). Indian Television Industry: Past, Present, and Future. *Journal of Media Studies*, 10(2), 45-58.

Singh, A. (2020). The Impact of Digital Media on Indian Society. *Indian Journal of Communication Studies*, 15(3), 112-125.

Thapar, Romila. (2013). *The Mauryan Empire: Pillars and Pillar Inscriptions*. In Ashoka and the Decline of the Mauryas, 97-110. Oxford University Press.

कौशिक, आर. (2008). मध्यकालीन भारतीय समाज और संस्कृति. दिल्ली: आर्य बुक्स इंटरनेशनल।

चौधरी, सुरेश. (2005). मुगल सम्राटों का भारत. नई दिल्ली: वीता प्रकाशन।

© WE Faculty of Arts